आरोह

भाग 1

कक्षा 11 के लिए हिंदी (आधार) की पाठ्यपुस्तक

11066

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी
Board of School Education Haryana, Bhiwani

मूल संस्करण :
© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधांन और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

अभिगृहित :
© हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

संस्करण : **2020**

संख्या : **15,000 प्रतियाँ**

मुल्य : **₹75/-**

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण और प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनविक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

आभार प्रदर्शन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने इस पुस्तक को छापने तथा हरियाणा के विद्यालयों में इसे पाठ्य–पुस्तक के रूप में पढ़ाने की अनुमति हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी को प्रदान करने की कृपा की है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी इसके लिए उनका हृदय से आभार प्रकट करता है।

सचिव

टैक्स्ट 80 जी॰एस॰एम॰ डी एस जी पेपर मिल और कवर 170 जी॰एस॰एम॰ विशाल पेपर मिल के कागज पर मुद्रित।

सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी द्वारा प्रकाशित एवम् एस जी प्रिण्ट पैक्स प्रा॰ लि॰, नोएडा–201301, उ॰प्र॰ द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल–केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना–सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्त्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय–सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी

कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस, और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो. नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनीटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 दिसंबर 2005

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू. नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनूप कुमार, *प्रोफ़ेसर,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
इन्द्रा सक्सेना, *अध्यापिका,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
उषा शर्मा, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
दिलीप सिंह, *प्रोफेसर एवं कुल सचिव,* दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई
नीलकंठ कुमार, *अध्यापक,* नयी दिल्ली
रवीन्द्र त्रिपाठी, *पत्रकार,* नयी दिल्ली
रामबक्ष, *प्रोफ़ेसर,* जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
संजीव कुमार, *वरिष्ठ प्रवक्ता,* देशबन्धु कालेज, नयी दिल्ली
समीर वरण नन्दी, *अध्यापक,* बी.एच.ई.एल. स्कूल, हरिद्वार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित नीरजा रानी, पी.जी.टी., चंद्र आर्य विद्या मंदिर, नयी दिल्ली का आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तक में सम्मिलित करने के लिए जिन रचनाकारों / परिजनों / संस्थाओं / प्रकाशनों / पत्रिकाओं से अनुमति मिली है, उनमें कृष्णा सोबती, शेखर जोशी, मन्नू भंडारी, कृष्ण नाथ, त्रिलोचन, निर्मला पुतुल; सत्यजित राय और कृश्नचंदर के लिए राजकमल प्रकाशन; रज़ा के लिए अशोक वाजपेयी; पंत के लिए सुमिता पंत, रामनरेश त्रिपाठी के लिए जयंत कुमार त्रिपाठी; दुष्यंत कुमार के लिए राजेश्वरी त्यागी और पाश के लिए चमनलाल के कृतज्ञ हैं।

पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक, *कॉपी एडीटर,* राम जी तिवारी, प्रमोद कुमार तिवारी और यतेन्द्र कुमार यादव, *प्रूफ रीडर,* कमलेश कुमारी और इन्दुमति सरकार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* जय प्रकाश राय और सचिन कुमार के हम आभारी हैं; लेखकों के चित्रों के लिए राजकमल प्रकाशन और संजय जोशी, साज सज्जा संबधी चित्रों के लिए मड़ई और बाल भवन पत्रिका तथा पाठ्य सामग्री संबंधी सहयोग के लिए कथाचित्र पत्रिका के आभारी हैं।

यह पुस्तक

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–(2005) इस बात पर बल देती है कि शिक्षा बोझरहित और रुचिकर हो ताकि विद्यार्थी को खुद–ब–खुद पढ़ने का चस्का लग जाए। वर्तमान शैक्षिक सरोकारों के संदर्भ में यह एक चुनौती है। भाषा बच्चे की शिक्षा के लिए ज़मीन का काम करती है और साहित्य इस ज़मीन की सिंचाई का प्रमुख साधन है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की यह चुनौती भाषा–साहित्य की पुस्तकों के लिए कुछ अधिक है। इस पुस्तक के निर्माण में चयन और प्रस्तुति दोनों ही स्तरों पर यह कोशिश रही है कि हिंदी भाषा–साहित्य की शिक्षा अमूर्त न रह कर विद्यार्थी के जीवन, रुचि और अनुभव संसार का हिस्सा बन सके।
- यह पुस्तक ग्यारहवीं कक्षा में आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए बनाई गई है। युवावस्था की दहलीज़ पर कदम रखते ये किशोर विद्यार्थी जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की संभावनाएँ तलाश रहे होते हैं। हमारा प्रयास है कि भाषा साहित्य की यह पुस्तक संभावनाएँ तलाशते विद्यार्थी के लिए सोच–विचार, विमर्श और अभिव्यक्ति का पुख्ता आधार तैयार करने में मदद करे।
- आधुनिक हिंदी अपनी विकास यात्रा में विभिन्न आयाम और आकार लेती रही है। यह भी कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में जिस तरह से भावबोध का विकास हुआ है, उसी तरह हिंदी साहित्य का भी। इसके प्रतिबिंबन के लिए कालक्रम के विकास के अनुसार हिंदी साहित्य के विविध रूपों को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है ताकि विद्यार्थी इस पुस्तक के द्वारा अबतक के हिंदी के विकासक्रम से अपने को जोड़ सकें।
- यह प्रतिबिंबन केवल हिंदी तक सीमित न रहकर हिंदीतर भाषाओं के अनुवाद को भी समेटे हुए है। यह कोशिश एक ओर पूरे देश के सामाजिक पटल से जुड़ने का प्रयास है तो दूसरी ओर अनुवादों में विस्तार पाती हिंदी के सामर्थ्य की पहचान भी है।

- जब सामाजिक भावबोध बदलता है तो साहित्य नया आकार लेता है और जब नया साहित्य आता है तो भाषा भी नया रूप लेती है। कबीर ने कहा भी है 'भाखा बहता नीर', यानी भाषा स्थिर न होकर गतिशील है। इस पुस्तक में प्रारंभिक हिंदी से लेकर आज के समय में लिखी जाने वाली हिंदी के रूप भी मिल जाएँगे, इसके माध्यम से हमारा प्रयास यह भी है कि विद्यार्थी के भाषा संसार का विस्तार हो और वे जान सकें कि भाषा युग के अनुसार नया रूप और आकार ग्रहण करती है।
- आज से कुछ समय पहले तक साहित्य कुछ खास वर्गों तक सीमित था, लेखक और पाठक दोनों ही दृष्टियों से। वर्तमान समय में साहित्य के लेखक और पाठक की दुनिया का विस्तार हुआ है। समाज के वे हिस्से जो अब तक अनदेखे थे, उन्हें वाणी मिली है। अबतक वंचित रहे तबके का साहित्य के मंच पर रचनात्मक उदय हुआ है। स्त्री, दलित, आदिवासी लेखकों की ऊर्जा से साहित्य की भाषा को नया तेवर और अभिव्यक्ति का नया व्याकरण मिला है। हमारी कोशिश है कि युवा होते विद्यार्थियों का इस नयी अभिव्यक्ति से अपनापे का रिश्ता बन सके।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है– साहित्य इतिहास नहीं है साहित्य विज्ञान नहीं है, साहित्य गणित नहीं है, साहित्य दर्शन नहीं है लेकिन साहित्य में यह सब एक साथ मौजूद है। यों तो यह बात किसी भी भाषा के साहित्य पर लागू होती है, लेकिन अगर आज हम केवल हिंदी साहित्य को देखें तो हिंदी का पसरता संसार एक ओर कश्मीर से कन्याकुमारी को जोड़ता है तो दूसरी ओर पत्रकारिता, समाज विज्ञान, पर्यावरण, अर्थविज्ञान, कला, फ़िल्म आदि को समेटे है। हमारा प्रयास इन विभिन्न प्रयुक्तियों में विस्तार पाती हिंदी से विद्यार्थियों का संवाद कराना है।
- वर्तमान समय में जहाँ एक ओर कई विधाएँ एक दूसरे से मिलजुल गई हैं, वहीं दूसरी ओर कई नयी विधाओं का उदय भी हुआ है। रचनात्मक ऊर्जा किसी बंधन को स्वीकार नहीं करती। कई कालजयी रचनाएँ बंधन को तोड़ती हैं और नयी विधा को जन्म देती हैं। विद्यार्थी का ज्ञान केवल एक या दो विधाओं तक सीमित न रहे, बल्कि वह वर्तमान समय की समस्त विधाओं से यथासंभव

परिचित हो सके, इस दृष्टि से इस पुस्तक में कई नयी विधाओं को लिया गया है। शब्दचित्र, आत्मकथा और पटकथा ऐसी ही विधाएँ हैं।

- इस पुस्तक के दो खंड है– गद्य खंड और काव्य खंड, जिसमें गद्य और काव्य की विभिन्न छवियों को समाहित किया गया है। गद्य खंड में भारतेंदु युगीन (आधुनिक चेतना और नवजागरण की ऊर्जा संपन्न) हिंदी से लेकर वर्तमान हिंदी गद्य रचनाओं को चुना गया है। काव्य खंड में मुख्य रूप से खड़ी बोली की कविताओं को ही चुना गया है। चयन में तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं, एक– हिंदी कविता की पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए कबीर और मीरा के पदों का चयन। दो– आधुनिक हिंदी कविता की शैलियों और मुहावरों से परिचय के लिए रामनरेश त्रिपाठी से लेकर दुष्यंत तक की कविताओं की प्रस्तुति। तीन– अक्क महादेवी, पाश और निर्मला पुतुल की कविताओं के माध्यम से हिंदी कविता के समानांतर भारतीय भाषाओं की कविता की समझ पैदा करना। अभ्यासों में **पाठ के साथ और पाठ के आस-पास** की दुनिया और शब्दों के संदर्भगत अर्थ-छवियों के लिए **शब्द-छवि** को समाहित किया गया है, जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का एक प्रमुख उद्देश्य है।
- शब्दों के साथ-साथ रंगों की एक बड़ी दुनिया अनदेखी रही है। लोकचित्र ऐसे ही रंगों की दुनिया है जहाँ आदिम संस्कृति अपनी पूरी ऊर्जा के साथ दिखाई पड़ती है। इस पुस्तक की साज-सज्जा में जगह-जगह लोकचित्र दिखाई पड़ेंगे, जिनकी आड़ी-तिरछी रेखाएँ हमें एक अलग दुनिया में ले जाती हैं। इसी के समानान्तर मुखावरण पर बहुरंगी संस्कृति को अभिव्यक्त करता सैयद हैदर रज़ा का चित्र **राजस्थान** तथा पृष्ठावरण पर ज्ञान के नए अंकुरण को संकेत करता **जर्मिनेशन** नामक चित्र दिया जा रहा है। चित्रों की इस दुनिया से गुज़रना अपनी जड़ों से जुड़ने का एहसास दे सकता है।
- विद्यार्थी, पुस्तक और अध्यापक के बीच एक संवादात्मक रिश्ता कायम हो, यह पुस्तक इस दिशा में एक प्रयास है। यह प्रयास निरंतर बेहतर होता रहे, इसके लिए सुझावों का स्वागत रहेगा।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषय-सूची

गद्य खंड

	आमुख		*iii*
	यह पुस्तक		*vii*
1.	प्रेमचंद	नमक का दारोगा	3
2.	कृष्णा सोबती	मियाँ नसीरुद्दीन	20
3.	सत्यजित राय	अपू के साथ ढाई साल	31
4.	बालमुकुंद गुप्त	विदाई-संभाषण	44
5.	शेखर जोशी	गलता लोहा	54
6.	कृष्णनाथ	स्पीति में बारिश	68
7.	मन्नू भंडारी	रजनी	79
8.	कृश्नचंदर	जामुन का पेड़	100
9.	जवाहरलाल नेहरू	भारत माता	112
10.	सैयद हैदर रज़ा	आत्मा का ताप	118

काव्य खंड

1.	कबीर	1. हम तौ एक एक करि जांनां।	129
		2. संतों देखत जग बौराना।	
2.	मीरा	1. मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई	135
		2. पग घुंघरू बांधि मीरां नाची	

3.	रामनरेश त्रिपाठी	पथिक	140
4.	सुमित्रानंदन पंत	वे आँखें	145
5.	भवानी प्रसाद मिश्र	घर की याद	151
6.	त्रिलोचन	चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती	158
7.	दुष्यंत कुमार	गज़ल	164
8.	अक्क महादेवी	1. हे भूख! मत मचल	169
		2. हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर	
9.	अवतार सिंह पाश	सबसे खतरनाक	173
10.	निर्मला पुतुल	आओ, मिलकर बचाएँ	179